एक मूक गाथा

प्रयाँशु विश्नोई 'सरजी'

''एक मूक गाथा''

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi – 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-98-2

Price: ₹ 214.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts ofPublisher

Printed in India

“एक मूक गाथा”

प्रयाँशु विश्नोई ‘सरजी’

समर्पित

मेरा ये काव्य-संग्रह समर्पित है, उन सभी प्रियजनों को जो मेरे जीवन में किसी ना किसी रूप से मेरी भावनाओं को जागृत कर उन्हें कविता के रूप में ढालने के माध्यम बने।

इस किताब को लिखने में मेरे दोस्तों का बहुत बड़ा योगदान है। इस किताब का नाम रचना चौधरी जो कि मेरी अच्छी दोस्त है, उन्होंने मुझे दिया और इसके अलावा हमारे साथ के कुछ और मित्र राहुल सोमानी, प्रयास जैन, शान्तनु पराशर, शुभम सिंह, शुभम सिंह(व्व), निशांत गुप्ता, अभिनमन शर्मा, शिवम् त्यागी, इमरान सिद्दीकी, अम्बुज मिश्रा, अनिकेत पहारिया, आशीष अवस्थी, प्रखर शुक्ला, प्रखर पोरवाल, नवीन दीक्षित, शिवम् द्विवेदी, पुलकित कंसल, राघव कृष्ण गोयल, सार्थक सिंह, प्रिया स्वामी, पूर्णिका सिंह, प्रियंका सेठ, रश्मि रंजन, मानसी गुप्ता, पूजा द्विवेदी, कनुप्रिया मलिक, पल्लवी सिंह, तान्या विश्नोई, रूपल चौधरी, संगीता पाल ने हमारा किसी ना किसी तरह से हमारे इस सफर में हमारा साथ दिया।

अगर इन सभी मित्रों का साथ ना मिला होता, तो शायद ये सफर पूरा करना और भी मुश्किल होता।

इस सफर में मेरी बुआजी वर्षा विश्नोई का मुझे जीवन में एक सही राह दिखाने में बहुत बड़ा योगदान है।

मैं उन बाकी सभी लोगों का भी बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मेरी कविताएँ सुनी और मेरी इस काव्य यात्रा में मेरा साथ देते हुए मुझे प्रोत्साहित करते रहे और मुझे मेरी इन कविताओं को आप तक पहुँचाने के लिए प्रेरित करते रहे।

पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक ''एक मूक गाथा'' एक काव्य संग्रह है। जिसकी कविताएँ लिखी गयी हैं, कुछ मन में उत्पन्न अहसासों को कहने के लिए। मैं इस किताब का नाम पहले ''बिन कहे सब कुछ कह डाला'' रखने वाला था, पर मुझको मेरे दोस्तों ने इसका और गहराई से झलकता नाम दिया। ये नाम शायद अच्छी और ज्यादा कुशल तरीके से दो शब्दों में ही पुस्तक के बारे में बहुत कुछ कह रहा। इस पुस्तक की सभी कविताएँ, प्रेम में होते वाले उतार-चढ़ाव की कविताएँ हैं, दर्द हैं, खुशियाँ हैं, मिलना-बिछड़ना और कई और भी मोहब्बत के चेहरों को दिखाती, समझाती और सीख देने वाली कविताएँ हैं।

इस किताब में मुझको एक बात का दुख है कि मैं सिर्फ आशिकी को दिखाने वाले प्रेम तक ही पहुँच पाया और देश-प्रेम, माता-पिता के लिए कुछ ना लिख सका। इस कारण मैंने एक सवाल भी पूछा अपने आपसे....

ज़िक्र-ए-मोहब्बत में,
बस मोहब्बत-ए-आशिकी,
वालिद वतन की मोहब्बत,
क्या मोहब्बत नहीं होती।

प्रयाँशु विश्नोई 'सरजी'

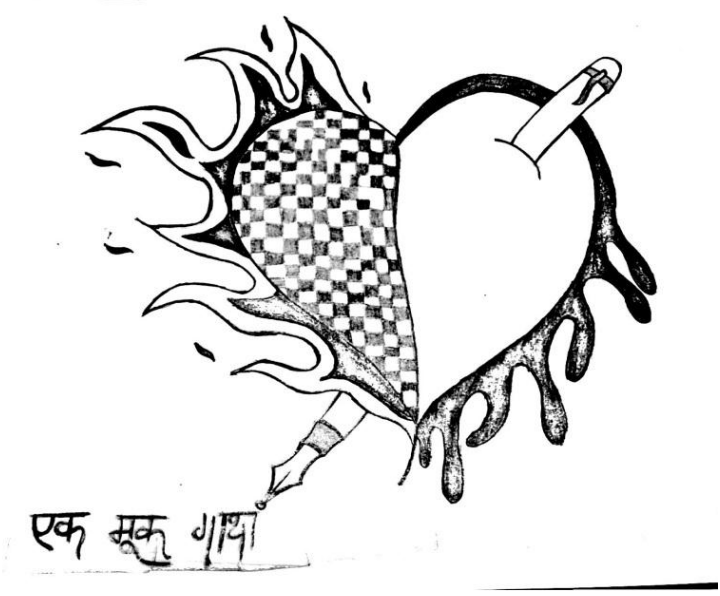

शौक-ए-ग़ज़ल तो हमे बचपन से था,
पर शौक-ए-मोहब्बत में ग़ज़ल
'सरजी' बिगाड़ देती है।

ये शुरुआत है मेरी
ज़रा सा साथ तुम देना
ये अंत है मेरा,लगा हाथ तुम देना
अब तो डूबूँगा तो बस मैं तुम्हारे ही समन्दर में
प्यास ना बुझे तो ना सही
पर,अपने थपेड़ों से हमें
किनारे लगा तुम देना।

प्रेम पूजन

इस प्रेम की पूजा को थोड़ा समझो,
प्रसाद भोग चढ़ावा पानी,..
नहीं चढ़ाया जाता इसमें,...
हृदय से करते हैं नमन उन्हें...।
सदा हँस कर विनती की जाती है,...
मिली हुई चोटों को मीठी कहकर...।
बस सुख की दुआयें उन्हें दी जाती है..।।

आरती थाल नहीं सजते,...
बस दुनिया सुन्दर हो जाती है,...
मंत्र जाप नहीं करते
बस याद उन्हीं की आती है...।।

सबद-कीर्तन भागवत सा
गीता का सार नहीं है,
ये प्रेम की पूजा बिल्कुल सीधी,...
कड़वे जीवन की मीठी रसधार यही है...।।

ये दिल नहीं कुछ और है

जिसे कहती है दुनिया दिल,
जिसमें बसती है सबकी मंजिल
ये दिल नहीं कुछ और है,
शायद इंसान की हस्ती में छुपा कोई चोर है।

लूटता है इंसान को, तोड़ता है हर आस को,
ज़जबातों का हथियार है,
ये दिल शिकारी और
इंसान इसका शिकार है
ये दिल नहीं कुछ और है।

इसमें ही चाहत पनपती हैए
दुनिया एक इंसान में सिमटती है
आँखों को जुबां देती और
जुबां बातों को तरसती है।

ये शौक-ए-आशिकी से भरा,
शौक-ए-वफा से घिरा,
ये दिल होशियार भी बड़ा,
इसके जुर्म में आँखें बरसती है
ये दिल नहीं कुछ और है।

हर गलती की बुनियाद है,
हर दर्द की शुरुआत है
बहुत मासूम बनकर है छिपा रहता,
पर ये हर ज़ालिम की हदों से भी पार है।

कुछ लोग कहते हैं कॉच भी इसको,
बोझ लाखों उठाकर भी तो यूँ चलता
मानों इसका पत्थरों का व्यापार है,
कुछ भी हो,
ये दिल नहीं कुछ और है।

परिचय

उत्तर प्रदेश के औरैया जिले में मेरा जन्म २ अप्रेल १९९७ को हुआ। मेरे पिता श्री सीताराम विश्नोई एक व्यापारी हैं और माता श्रीमति अर्चना विश्नोई गृहणी हैं।

प्रारंभ से ही अंग्रेजी माध्यम से पढ़े होने के कारण हिन्दी से हम हमेशा दूर ही रहे, पर शायद कहीं लिखने की चाह थी जो कहीं पनप रही थी। बचपन में कभी-कभी लिखने की कोशिश की पर, कभी कुछ ज्यादा अच्छा नहीं हुआ।

पर जब बारहवीं के बाद अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के लिए कॉलेज गया, तब शायद कोई प्रेरणा मिली या कुछ ऐसा माहौल बन गया कि अपने आप ही शब्द कविता में बदलने लगे। मैंने अपने कॉलेज के पहले साल से ही कविताएँ लिखने की शुरूआत की या कह लो कि शुरूआत हुई और ना जाने कब वो शुरूआत इतनी बढ़ गयी कि एक किताब बन सके और करीब ९ महिनें में ये किताब पूरी हो गयी और इसके साथ ही मुझको एक नया नाम मिला "सरजी" मेरे दोस्तों से, जो कि मुझको बहुत प्रिय हैं और मैं इस नाम को हमेशा अपने साथ रखना चाहता था, इस वजह से अब से मेरा उपनाम भी है।

आज मैं इंजीनियरिंग के दूसरे साल का छात्र हूँ, ग़ज़ियाबाद के अजय कुमार गर्ग इंजीनियरिंग कॉलेज में। मैं कोई कवि नहीं, कोई लेखक नहीं, बस अपने भावों को कविता के माध्यम से कहने वाला एक विद्यार्थी हूँ और अपने भावों, अपने कविता से अगर किसी और का मन खुश कर सकूँ तो, शायद मुझको और भी खुशी होगी और ये किताब इसी कोशिश का एक जरिया मात्र है।

तू जो सीता है, शायद मैं वो राम नहीं बन पाया,
तू जो राधा है, शायद मैं वो घनश्याम नहीं बन पाया।

You may reach the author at -
prayanshu2k14@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-98-2
9 788119 927982